# Self Respect

24-07-2014

✓क्या सोच रहे हो? नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार हर एक की जीव आत्मा अब अपने ऊपर वन्डर खा रही है कि हम क्या थे, किसके बच्चे थे और बरोबर बाप से वर्सा मिला था, फिर कैसे हम भूल गये! हम सतोप्रधान दुनिया में सारे विश्व के मालिक थे, बहुत सुखी थे । फिर हम सीढ़ी उतरे । रावण आया गोया इतनी फागी आ गई जो रचता और रचना को हम भूल गये । फागी में मनुष्य रास्ता आदि भूल जाते हैं ना । तो हम भी भूल गये-हमारा घर कहाँ है, कहाँ के रहने वाले थे ।

- ✓अब बाबा देख रहे हैं हमारे बच्चे, जिन्हें हम आज से 5 हजार वर्ष पहले राज्य- भाग्य देकर गये, बड़े आनन्द मौज में थे, यह भूमि फिर क्या हो गई! कैसे रावण के राज्य में आ गये! पराये राज्य में तो जरूर दुःख ही मिलेगा ।
- ✓ यह सब बातें बुद्धि में आनी चाहिए-हम क्या थे फिर कैसे राज्य- भाग्य करते थे फिर कैसे सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते रावण की जंजीरों में बंधते गये । अपरमअपार दुःख थे । पहले-पहले तुम अपरमअपार सुख में थे । तो दिल में आना चाहिए, अपने राज्य में कितना सुख था फिर पराये राज्य में कितना दु :ख उठाया ।

- ✓यह तो विश्व के मालिक थे ना । फिर यह कहाँ गये? फिर से अपना राज्य- भाग्य ले रहे हैं । कितना सहज है ।

- ✓बाप समझाते हैं तुम अभी रावण राज्य में तो नहीं हो ना । तुम तो ईश्वर के पास बैठे हुए हो । तो इन विकारों से छूटने की प्रतिज्ञा करनी है । बाप कहते हैं अब मुझे याद करो । क्रोध मत करो । 5 विकार तुमको आधाकल्प गिराते आये हैं । सबसे ऊंच भी तुम थे । सबसे जास्ती गिरे भी तुम हो । इन 5 भूतों ने तुमको गिराया है । अब शिवालय में जाने के लिए इन विकारों को निकालना है ।

- ✓तुम समझते हो हम रावणराज्य में थे, अब रामराज्य में जाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं । अभी हम पुरूषोत्तम संगमयुग वासी हैं । भल गृहस्थ में रहो ।
- ✓हम क्या थे, अब हम पराये राज्य में बैठे हैं । कितना हम दु :खी थे । अब बाबा हमको फिर ले जाते हैं तो गृहस्थ व्यवहार में रहते वह अवस्था जमानी है । शुरू में कितने बड़े-बड़े झाड़ आये, फिर उनसे कोई रहे, बाकी चले गये । तुम्हारी बुद्धि में है हम अपने राज्य में थे फिर अभी कहाँ आकर पड़े हैं । फिर अपने राज्य में जाते हैं ।

- ✓किंग महेन्द्र (भोपाल के) भी पुरूषार्थ कर रहा है । वह किंग तो पाई पैसे के हैं, यह तो सूर्यवंशी राजधानी में जाने वाला है । पुरूषार्थ ऐसा हो जो विजय माला में जा सकें ।
- ✓आत्मा भाई- भाई है । तुम कितने सुखी थे जब पूज्य थे । अब तुम पुजारी दु :खी बन पड़े हो ।
- ✓ तुम ही गोरे थे फिर सांवरे बने । सांवरे कृष्ण को भी देखकर बड़ा खुश होते हैं । झूले में भी सांवरे को झुलायेगे । उनको क्या पता कि गोरा कब था ।

- ✓बाप आकर अपना बगीचा देखते हैं किस-किस किस्म के फूल हैं । यहाँ से जाकर फिर उस बगीचे में फूलों को देखते हैं । शिवबाबा को फूल भी बरोबर चढ़ाते हैं । वह तो है निराकार, चैतन्य फूल । तुम अभी पुरूषार्थ कर ऐसा फूल बनते हो ।

- ✓अन्दर में तुम्हें यह स्मृति आनी चाहिए हम जिस राज्य में थे, वह फिर से अब पा रहे हैं । उसके लिए पूरा पुरूषार्थ करना चाहिए । बिल्कुल एक्यूरेट सर्विस चल रही है ।

✓वरदान: कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा ब्लैसिंग का अनुभव करने वाले कर्मयोगी भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।